कहानी डॉली डॉल्फिन की

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

डॉली डॉल्फिन

संध्या जोशी
रूचि बडोला

भूमिका

एक नदी के परितंत्र को बचाये रखने में उसके अंदर एवं बाहर रहने वाले जलीय जीवों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक जीव नदी को बचाये रखने में अपनी–अपनी भूमिका निभाता है। कुछ नदी के बाहरी वातावरण को स्वच्छ बनाये रखने में सहायक होते हैं तो कुछ नदी के पानी की अंदरूनी स्वच्छता को बनाये रखते हैं। नदियों में बढ़ते प्रदूषण और मानवजनित गतिविधियों का असर जहाँ नदियों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक प्रभाव डाल रहा है वहीं जलीय जीवों के जीवन पर भी इनका विपरीत असर देखने को मिल रहा है।

भारतीय वन्यजीव संस्थान तथा राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की संयुक्त परियोजना **जैवविविधता एवं गंगा संरक्षण** के अंतर्गत जनसमुदाय की जलीय जीवों के संरक्षण में सहभागिता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। इसी के अंतर्गत बच्चों को बाल गंगा प्रहरी की भूमिका में तैयार कर उन्हें नदी की जैवविविधता एवं संरक्षण के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

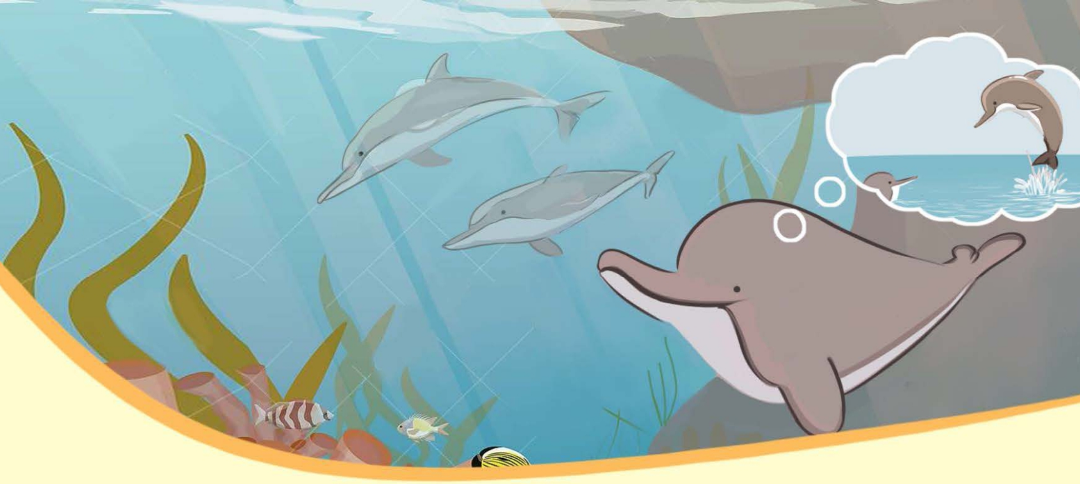

जलीय जीवों से बच्चों को परिचित करवाने और उनके संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा जलीय जीवों की कहानी आधारित बाल कहानी पुस्तिका की श्रृंखला का प्रकाशन किया जा रहा है। जो कि 6 भागों में प्रकाशित होंगी। इन बाल कहानी पुस्तिकाओं में उन जलीय जीवों की जानकारी दी गई है जो कि नदियों के अंदर रहते और बाहर रहते हैं और जो नदियों तथा वैटलैंड्स पर भोजन तथा अपने आवासों के लिए आश्रित हैं। प्रस्तुत बाल कहानी पुस्तिका में गंगा में पाई जाने वाली डॉल्फिन के विषय में कहानी के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी गई है। डॉल्फिन के विलुप्ति की कगार पर पहुंचने के कारणों तथा उनके जीवन के खतरों पर भी प्रकाश डाला गया है।

ये बाल कहानी पुस्तिका अध्यापकों के लिए बच्चों को जलीय जीवों के संरक्षण के प्रति जागरूक बनाने में सहायक सिद्ध होंगी, साथ ही गंगा नदी तंत्र व जलीय जीवों के विषय में सरल और मनोरंजक माध्यम से जानकारी दे पायेंगे।

संध्या जोशी

गांगेय डॉल्फिन

प्यारे बालगंगा प्रहरी दोस्तों जलीय जीव बाल कहानी पुस्तिका की श्रृंखला में आज हम आपके सामने लेकर आये हैं डॉली डॉल्फिन की कहानी। आप से अगर मैं ये पूछूँ कि डॉल्फिन के बारे में आप लोग क्या जानते हैं? तो शायद आप का जवाब होगा कि डॉल्फिन एक मछली है। गंगा के किनारे रहने वाले बच्चों के अतिरिक्त शायद ये बहुत कम बच्चे जानते होंगे कि डॉल्फिन समुद्र में ही नहीं बल्कि गंगा और उसकी कुछ सहायक नदियों में मीठे पानी यानी फ्रेश वॉटर की डॉल्फिन की कुछ प्रजातियाँ भी रहती है। आपको हैरानी होगी कि डॉल्फिन मछली नहीं है, एक मैमल है जो हम इंसानों की तरह स्तन धारियों की श्रेणी में आती है। डॉल्फिन मछलियों की तरह अंडे ना देकर बच्चों को जन्म देती हैं तथा एक बार में केवल एक ही बच्चे को जन्म देती है। इसी कारण डॉल्फिन में हम इन्सानों की ही भांति अपने बच्चों की देखरेख और प्यार करने की प्रवृत्ति देखी गई है। जब तक बच्चे स्वयं शिकार करने लायक नहीं होते तब तक डॉल्फिन एक स्तनधारी की ही भांति अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि नदी में जहां भी डॉल्फिन पाई जाती हैं वहां पानी साफ और स्वच्छ होता है। डॉल्फिन को गंदगी बिल्कुल पसंद नहीं है इसका मतलब ये है, कि डॉल्फिन जलीय तंत्र के स्वच्छ एवं स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र की द्योतक है। डॉल्फिन को पानी में अठखेलियां करना बहुत पसंद है, तैरने के लिए इनके फ्लिपर होते हैं। और आपको ये जानकर आश्चर्य होगा कि डॉल्फिन के शरीर पर भी अन्य स्तनधारियों की भांति रोंये होते हैं। जैसा कि आप सब जानते हैं मछलियों में सांस लेने के लिए गलफड़े होते हैं जिनसे मछलियाँ आसानी से पानी में सांस ले सकती हैं, जबकि इसके विपरीत डॉल्फिन के हम इंसानों की तरह सांस लेने के लिए फेफड़े होते है और प्रत्येक 30 से 120 सेकेंड के अन्तराल में ये पानी से बाहर सांस लेने के लिए आती है।

बच्चों आज हम कहानी के माध्यम से आप लोगों को डॉल्फिन के विषय में और भी रोचक और ज्ञान वर्धक जानकारियां देंगे आइये सुनते हैं डॉली डॉल्फिन की कहानी।

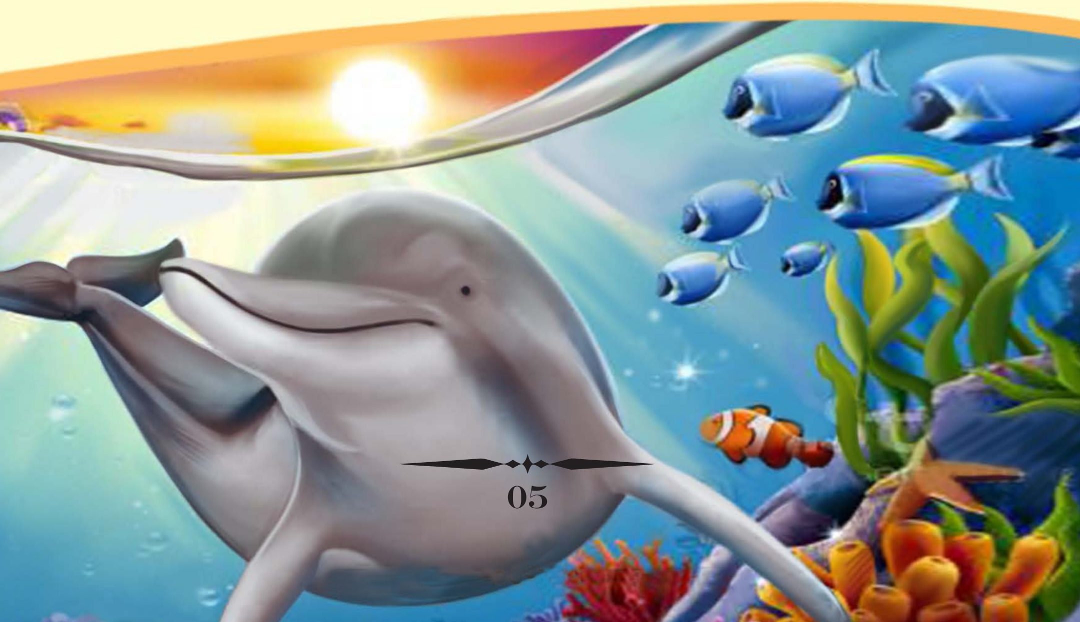

डॉली डॉल्फिन

गंगा के किनारे ढाका गाँव में मंदिर के पास की शांत और गहरी धारा में डॉली डॉल्फिन अपने परिवार के सदस्यों और अभी कुछ महीनों पहले ही पैदा हुए अपने नन्हें छौने के साथ मजे में दिन गुजार रही थी। मंदिर में बजने वाली घंटी की मधुर आवाज के साथ डॉली भगवान को धन्यवाद देती कि उनका परिवार गंगा नदी की पवित्र धारा में सुरक्षित और आनन्द से रह रहा है। डॉली का परिवार लगभग बीस वर्ष हुए होंगे तब से यहाँ रह रहा है। डॉली छोटी ही थी जब वो अपने माता पिता के साथ ढाका आई थी। इससे पहले उसका परिवार नरौरा के नरवर घाट में रहता था। नरवर घाट की धुंधली सी याद अभी भी डॉली के जेहन में बसी है। शांत गंगा के किनारे छोटा सा साफ–सुथरा नरवर घाट और मंदिर में शाम की आरती के समय बजने वाली घंटियों की टुन–टुन डॉली के कानों में अभी भी बजती है।

डॉली अपने परिवार से हमेशा नरवर घाट की बातें किया करती, नरवर घाट में छूटी अपनी पुरानी सहेलियों को याद किया करती। उसे अपनी सहेली रोली की सबसे ज्यादा याद आती जिसके साथ वो हमेशा कॉम्पिटिशन किया करती। दोनों सहेलियों में होड़ लगती कि कौन ज्यादा हवा में कलाबाजियाँ खा सकता है। जब डॉली करीब तीन साल की रही होगी तो उसके परिवार को नरवर घाट छोड़ना पड़ा। नरवर घाट के छोटे से इलाके में उसके बढ़ते परिवार के लिए एक तो जगह की कमी और दूसरा लोगों की ज्यादा आवाजाही के कारण उसके परिवार ने ये जगह छोड़ने का मन बनाया। उसका छोटा छौना अब थोड़ा बड़ा हो गया है उसकी शैतानी भरी अठखेलियों से डॉली परेशान हो जाती है। वो उसे अपनी आँखों से जरा भी ओझल नहीं होने देती।

डॉली को हमेशा मछुआरों के फैलाये जाल से डर बना रहता है। अगर डुग्गू गलती से उधर चला गया तो अनर्थ हो जायेगा। वो हमेशा गंगा मैया से अपने बच्चों की सलामती की दुआ करती रहती है। डुग्गू अभी भी माँ का दूध पीता है उसकी नानी हमेशा अपनी बेटी को दूध छुड़वाने की सलाह देती है। नानी का कहना है कि अब डुग्गू के दाँत आ गये हैं और उसे मछलियाँ खाना शुरू करना होगा। लेकिन डुग्गू को नानी की ये बात बिल्कुल पसंद नहीं आती है उसकी ये दलील होती है, कि अभी वो छोटा बच्चा है और बच्चों के लिए माँ का दूध फायदेमंद होता है। डुग्गू की इन बातों पे डॉली को बहुत प्यार आता वो माँ की बातों को दरकिनार कर अपने लाड़ले को अपने से चिपका कर मजे में तैरती रहती ।

और डुग्गू जी के तो मजे ही आ जाते हैं, वो अपनी माँ के साथ चिपका रहता और मां के सामने और भी शरारत करता रहता। पानी में उछल कूद करता कभी सीधा तैरता कभी उल्टा, डॉली अपने लाड़ले की ये शैतानियाँ देख कर खुश होती और गंगा मैया को अपनी शरण में रहने वाले जीवों को सुरक्षा देने के लिए धन्यवाद देती।

लेकिन डॉली को अब डुग्गू की थोड़ी चिन्ता होने लगी है। उसे लगता है कि अब वो समय आ गया है जब डुग्गू को जीवन जीने की कला सिखाने की जरूरत है। डुग्गू है कि कुछ सुनना नहीं चाहता, उसे तो बस मस्ती करनी है। डॉली ने एक दिन डुग्गू को अपने पास बुलाया और अपने से चिपका कर प्यार से बोला "डुग्गू अब तुम बड़े हो रहे हो, और जानते हो ना कि जब बच्चे बड़े होते हैं तो उन्हें कुछ जिम्मेदारियाँ भी उठानी पड़ती हैं।"

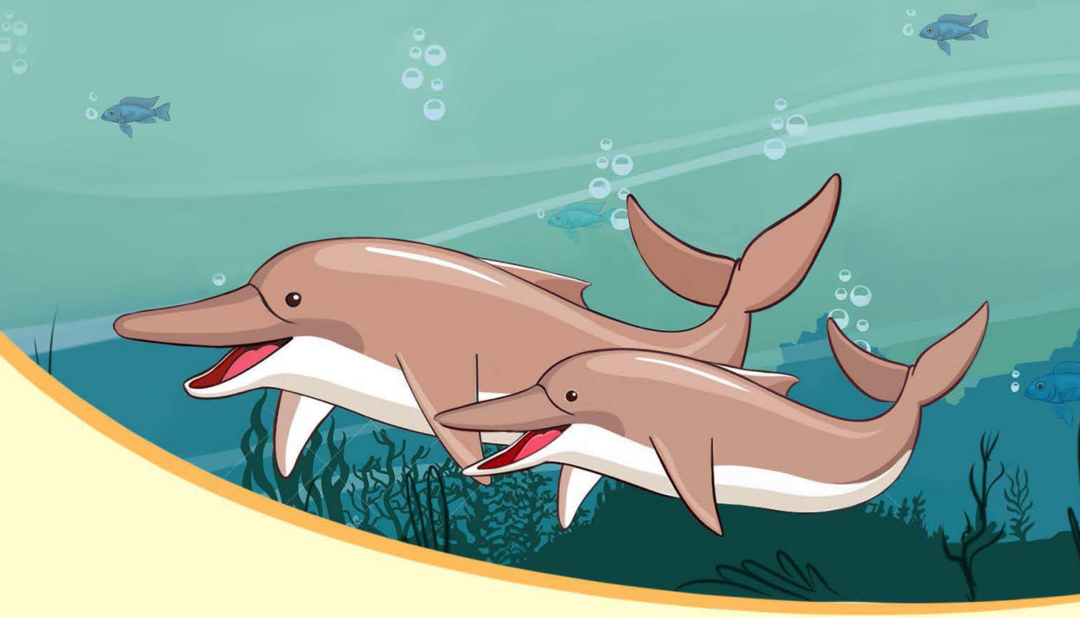

डुग्गू इठलाते हुए बोला "माँ अभी तो मैं छोटा बच्चा हूँ जब बड़ा हो जाउंगा तो खुद जिम्मेदार हो जाउंगा।"

डॉली ने डुग्गू को समझाया कि नदी के सारे बच्चे उसकी उमर तक समझदार होने लगते हैं और अपने सारे काम खुद से करते हैं। नदी के कुछ नियम होते हैं जिनका पालन नदी के सभी जीवों को करना होता है और अब डुग्गू को माँ पर निर्भरता कम करनी होगी तथा अपने खाने व अपनी सुरक्षा का ध्यान खुद से रखना होगा क्योंकि प्रकृति का यही नियम है।

डुग्गू ने माँ को आश्चर्य से देखा और पूछा "प्रकृति के नियम क्या होते है? और इनको मानने या ना मानने से क्या होगा" डॉली ने डुग्गू को प्यार से समझाया कि नियम केवल प्रकृति के ही नहीं बल्कि जो भी प्राणी इस जगत में रह रहा है सभी के लिए नियम होते हैं और सब के

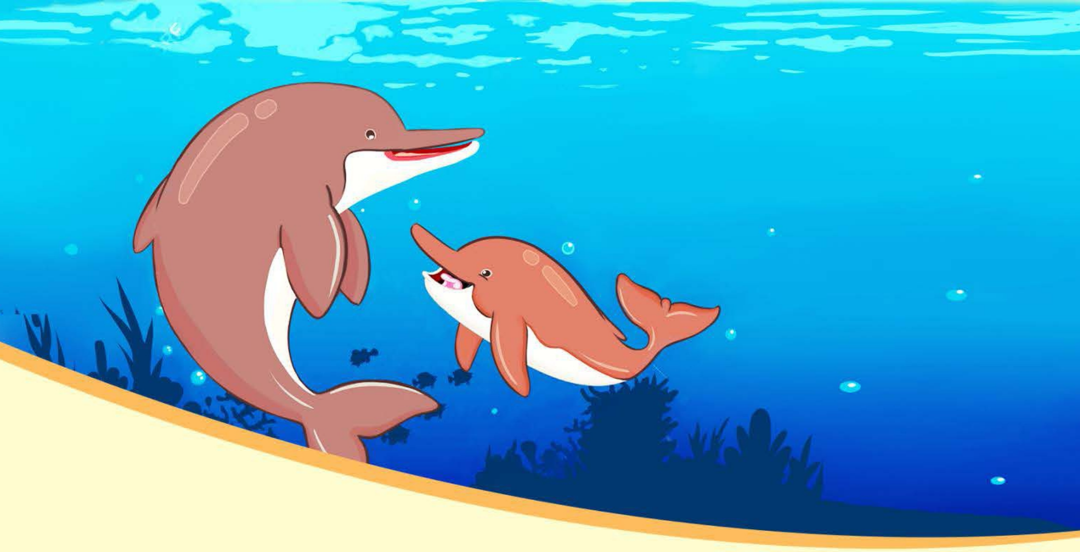

लिए इनका पालन करना जरूरी होता है। यदि इन नियमों का पालन नहीं किया गया तो प्रकृति का संतुलन बिगड़ जायेगा।

डुग्गू सोच में पड़ गया कि नियम ना मानने से प्रकृति का संतुलन कैसे बिगड़ सकता है। मैं तो कोई नियम नहीं मानता! तो मुझे तो कुछ बिगड़ते हुए नहीं दिखता। फिर भी उसने मासूमियत से पूछा कि सब के लिए नियमों का मानना जरूरी क्यों है ? डॉली ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया "मेरे बच्चे अब तुम बड़े हो रहे हो धीरे–धीरे सब समझ जाओगे। सबसे पहले अब तुम्हें आत्मनिर्भर बनना होगा। तुम्हें अपने खाने का खुद ध्यान रखना होगा" डुग्गू ने ठुनकते हुए उत्तर दिया कि उसे खाने की क्या जरूरत है, उसके लिए माँ का दूध ही काफी है। डॉली सोचने लगी कि काश बच्चे बड़े नहीं होते, कितने सरल और कितने मासूम होते हैं, दुनिया के छल–कपट से दूर। पर बदलाव ही जीवन का सार है जो कि हमे स्वीकार करना ही होगा। डॉली ने सोचा डुग्गू ऐसे तो मानेगा नहीं कोई और रास्ता निकालना होगा।

डॉली ने डुग्गू को बोला कि "चलो आज से हम रोज एक खेल खेलेंगे।" डुग्गू खेलने के नाम से खुश हो गया जल्दी से बोला माँ "कब खेलेंगे खेल, चलो आज से ही खेलते हैं।" डॉली मन ही मन हँसी कि डुग्गू फँस गया अब तो। डॉली ने नकली गंभीरता ओढ़ते हुए कहा "खेल शुरू करने से पहले हमें खेल के कुछ नियम तय करने होंगे।" डुग्गू ने सोचा कि अब खेलने के भी नियम होंगे क्या ? माँ हर बात में नियम की बात करती है लेकिन खेलने में मजा तो आयेगा ही। डॉली ने डुग्गू को अपने साथ के और भी बच्चों को खेल में शामिल करने के लिए बोला। डुग्गू खुशी से उछलने लगा उसने अपने साथियों से खेल की बात की, सारे बच्चे खुशी–खुशी तैयार हो गये। डॉली ने बच्चों से कहा कि सभी बच्चों को पानी के ऊपर हवा में उछलना होगा और जो बच्चा सबसे देर तक हवा में रह सकेगा उसे एक छोटी मछली खाने के लिए ईनाम में मिलेगी।

सारे बच्चे एक लाईन में आ गये और हवा में उछलने लगे और भरसक कोशिश करते कि वो सबसे लम्बी जम्प लगायें, डुग्गू ने भी पूरा जोर लगाया लेकिन बाकी के बच्चों से फिसड्डी ही रहा। लेकिन उसे यकीन था कि माँ उसे जिता ही देगी क्योंकि कॉम्पटीशन तो माँ ने ही किया था। जब रिजल्ट की बारी आई तो ईनाम की मछली उसकी दोस्त डिंकी को मिली। डुग्गू को माँ के ऊपर बहुत गुस्सा आया। उसने मुँह फुला लिया और माँ से दूर जा कर तैरने लगा। डॉली मन ही मन हंसी और डुग्गू के पास गई प्यार से पूछा कि उसे खेल कैसा लगा ? डुग्गू मुँह फुलाते हुए बोला कि उसे खेल में बिल्कुल मजा नहीं आया। डॉली ने अपनी हँसी को दबाते हुए कहा, लेकिन बाकी बच्चों को तो बहुत मजा आया और वो सब कल भी खेल में हिस्सा लेने वाले हैं। डुग्गू ने दूसरी तरफ मुँह फेरे हुए नाराजगी से कहा कि उन्हें खेलने दो लेकिन वो कल खेल में भाग नहीं लेगा।

डॉली ने डुग्गू को प्यार से गुदगुदाया और बोला अगर वो खेल में भाग नहीं लेगा तो बाकी के बच्चे उसका मजाक बनायेंगे और बोलेंगे क्योकि वो आज खेल में हार गया है इसलिए नहीं खेल रहा है। डुग्गू ने गुस्से में बोला कि अगर डॉली चाहती तो ईनाम डुग्गू को मिल सकता था। माँ ने जानबूझकर उसे हरवाया है। डॉली ने डुग्गू को समझाया कि बाकी बच्चे जब उससे बेहतर कर रहे थे तो ये कैसे सम्भव था कि वो ईनाम डुग्गू को मिल जाता यदि डुग्गू थोड़ी कोशिश करता और रोज उछलने का अभ्यास करता तो आज वो जीत सकता था। बाकी के बच्चे अब अपनी माँ से अलग हो कर ये सब किया करते हैं। पर डुग्गू को तो माँ से चिपके रहना होता है तो वो कैसे जीत सकता है ? जीतने के लिए कोशिश करनी होती है और कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। डुग्गू ने सोचा कि माँ सच ही तो कह रही है।

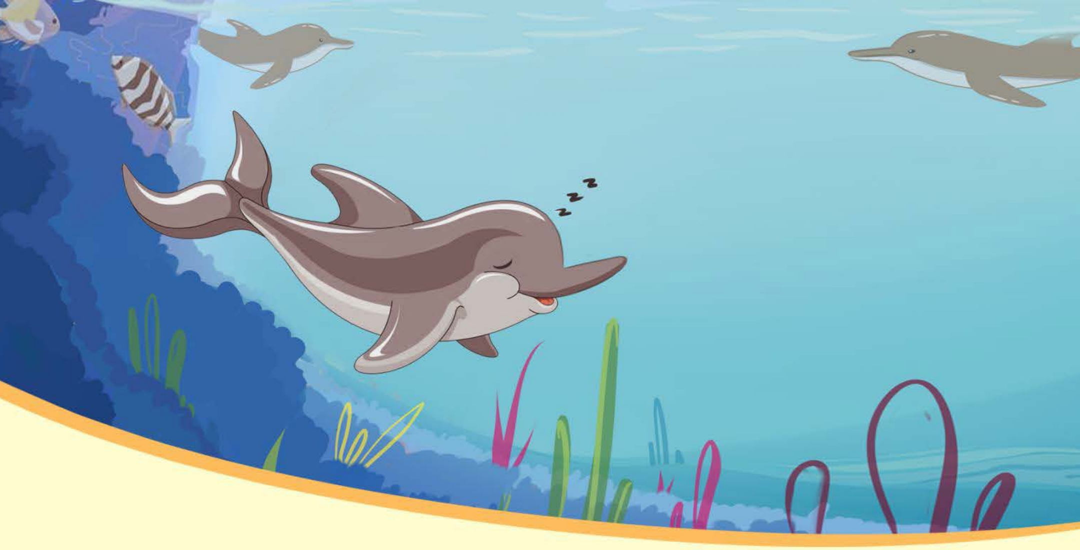

उसने तो कभी ये सोचा ही नहीं। उसने मन ही मन फैसला किया कि वो रोजाना प्रैक्टिस करेगा और माँ को जीत कर दिखायेगा। लेकिन ये सब वो माँ से छुप कर करेगा ताकि उसे सरप्राइज दे सके। माँ है कि अभी भी उसे बच्चा ही समझती है। अब वो साबित कर देगा कि वो अब बड़ा हो गया है। कितना मजा आयेगा जब माँ उसे खूब ऊंचे जम्प लगाते हुए देखेगी। वैसे जम्प मारने में मजा तो बहुत आता है। साथ में वो कलाबाजियाँ भी सीखेगा और माँ को और भी आश्चर्य में डाल देगा। डुग्गू ने डॉली से कहा कि वो उसे रोज सुबह जल्दी उठा दे।

डॉली मन ही मन मुस्कराई कि उसकी तरकीब काम आ गई। ऐसे में डुग्गू का आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और वो एक सफल डॉल्फिन बनने की ओर कदम बढ़ायेगा। डुग्गू तो ये सोच कर ही खुश हो रहा था कि अब वो अपने दोस्तों के सामने सर ऊँचा करके चलेगा और उन्हें दिखा देगा कि वो उनसे किसी भी तरह कम नहीं है। बच्चे अब से उसे माँ का चमचा बोल कर नहीं चिढ़ायेंगे।

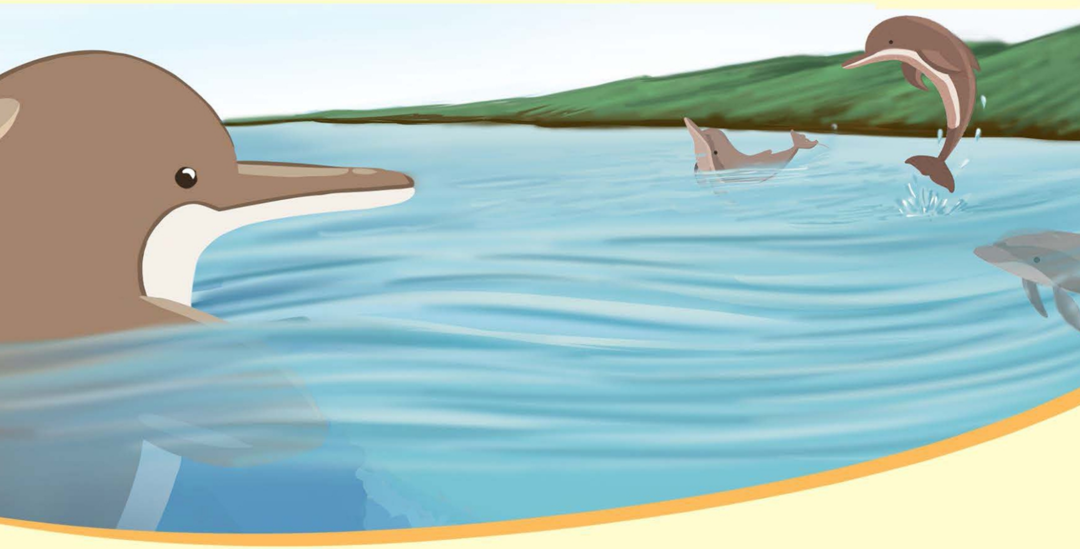

डुग्गू ने जल्दी से एक छलांग लगाई और पानी की सतह पे आकर देखा कि बच्चे पानी में कलाबाजियाँ दिखा रहे हैं डुग्गू को माँ पे बहुत गुस्सा आया कि उसने उसे उठाया भी नहीं और यहां बच्चे कलाबाजियों की प्रैक्टिस कर रहे हैं। डॉली ने डुग्गू को देखा और मुस्कराते हुए अपने पास बुलाया। डुग्गू ने शिकायत करते हुए बोला कि उसने जानबूझ कर ऐसा किया। डॉली ने डुग्गू से कहा कि वो रात को ठीक से सोया नहीं था तो उसे लगा कि डुग्गू को आज सोने दिया जाये ताकि उसकी नींद पूरी हो सके। डुग्गू ने मुँह फुलाते हुए कहा कि उसकी आज की प्रैक्टिस तो छूट गई और वो अन्य बच्चों से पिछड़ जायेगा। डॉली ने डुग्गू से कहा कि ये उसके सीखने के सबक का पहला पाठ है। उसे अपने समय का प्रबंधन खुद करना सीखना होगा। रात को जल्दी सो कर सुबह जल्दी जागना उसी का हिस्सा है। फिर भी अभी देर नहीं हुई डुग्गू चाहे तो प्रैक्टिस कर सकता है। डॉली ने डुग्गू को समझाया कि जिस तरह

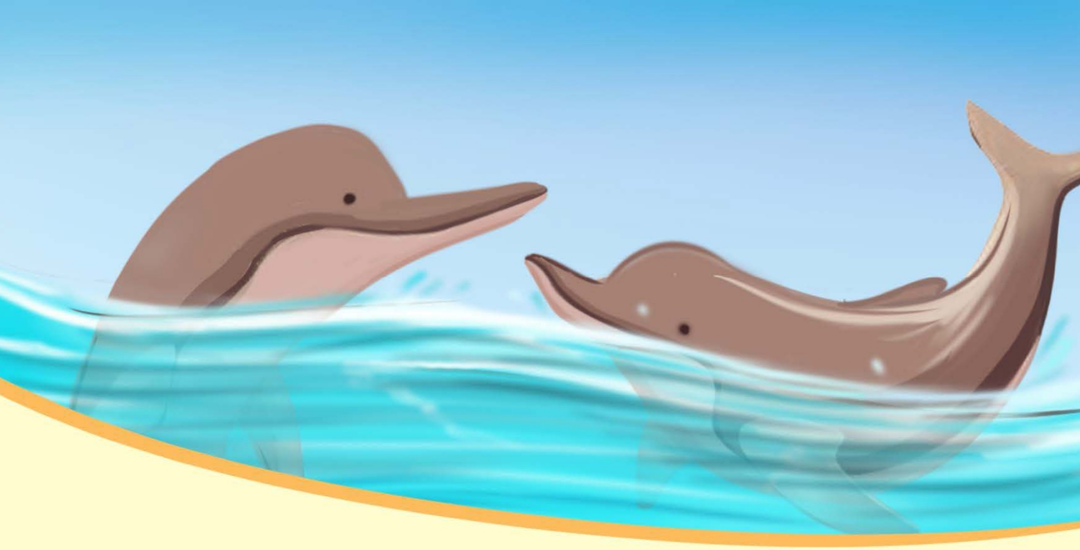

उसके लिए कलाबाजियों का अभ्यास जरूरी है उसी तरह रात को पूरी नींद लेना भी बच्चों के लिए उतना ही जरूरी है। अगर नींद पूरी नहीं होगी तो स्वास्थ्य पे बुरा असर तो पड़ेगा ही अभ्यास करने में भी दिक्कत आयेगी। और हां सबसे जरूरी बात ये कि बच्चों को अपने समय का प्रबंधन करना भी सीखना होगा। डुग्गू सोच में पड़ गया अब ये क्या है? समय का प्रबंधन.... ये तो कभी नहीं सोचा। डॉली डुग्गू को सोच में पड़े देख कर बोली कि क्या बात है डुग्गू ? क्या सोच रहे हो ? डुग्गू ने माँ से सवाल किया सब कुछ तो ठीक है लेकिन ये समय का प्रबंधन क्या होता है ? डॉली ने बताया कि समय का प्रबंधन पूरे प्राणी जगत के लिए बहुत जरूरी है। सारी प्रकृति समय से ही तो बंधी है। रात समय से होती है तो सूर्योदय का समय होता है। जैसे सोने का समय, उठने का समय, काम का समय। इस तरह सम्पूर्ण जगत समय से बंधा है और यदि हमने समय का सही तरीके से प्रबंधन नहीं किया तो सबकुछ गड़बड़ा जायेगा।

डॉली ने कल रात वाली बात डुग्गू को याद दिलाई कि जैसे वो रात को समय से नहीं सोया तो समय से उठ भी नहीं पाया और प्रैक्टिस करने का समय चला गया। डुग्गू ने सोचा माँ भी ना.... हमेशा समय देख कर पुरानी गल्तियों की याद दिलाती है। अरे...... ये भी तो समय है माँ ने क्या सही प्रबंधन किया। डॉली ने डुग्गू को समझाया कि एक अच्छी डॉल्फिन बनने के लिए उसे अभी बहुत कुछ सीखना होगा। डुग्गू ने बोला कि डॉल्फिन बनने के लिए सीखने की क्या जरूरत है। जैसे पानी में और इतनी सारी मछलियां हैं वैसे ही तो हम भी हैं, वो भी तो बहुत आसानी से पानी में रह लेती हैं। डॉली ने कहा कि वो ये सब बातें बाकी सारे डॉल्फिन बच्चों के सामने बतायेगी। डुग्गू ने सोचा माँ को हमेशा घुमा फिरा के बातें करने की आदत है। अब ये सारी बातें बच्चों के सामने बताने का क्या मतलब हुआ भला।

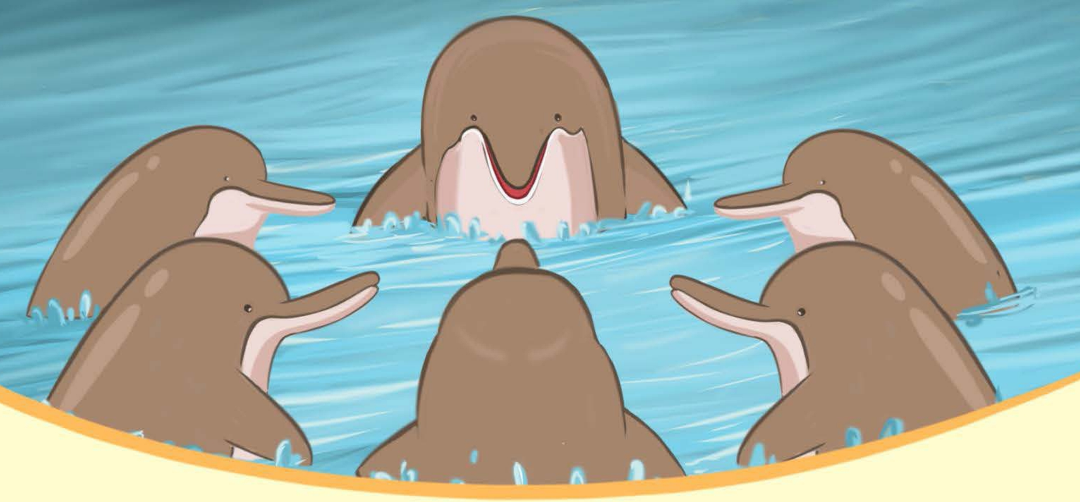

डिंकी और डुग्गू दोनों हवा में उछलने लगे।

डॉली को नजदीक आते देख डुग्गू जोर से उछलते हुए खुशी से चिल्लाया, माँ देखो मैं कितना ऊँचा उछल लेता हूँ। डॉली ने शाबासी देते हुए कहा कि ये ही तो डॉल्फिन की पहचान है। तभी और बच्चे भी आ गये और सब अभ्यास में भागीदारी करने लगे। डॉली ने सब बच्चों को नाश्ते में एक–एक छोटी मछली दी। और डुग्गू को दो मछलियाँ मिली क्योंकि आज डुग्गू ने सबसे लम्बी छलांग लगाई। नाश्ते के बाद डॉली ने सब बच्चों को अपने पास बुलाया और पूछा कि बताओ तो हम डॉल्फिन पानी से बाहर क्यों जम्प करती हैं ? बच्चे एक दूसरे का मुँह देखने लगे डुग्गू ने बोला कि हम खेलना पसंद करती हैं। डॉली मुस्कराई और बोली, हाँ ये भी सच है कि डॉल्फिन खेलना पसंद करती हैं। डिंकी ने कहा कि हम सांस लेने के लिए जम्प करती हैं। डॉली ने शाबासी देते हुए कहा कि ये बिल्कुल सही उत्तर है।

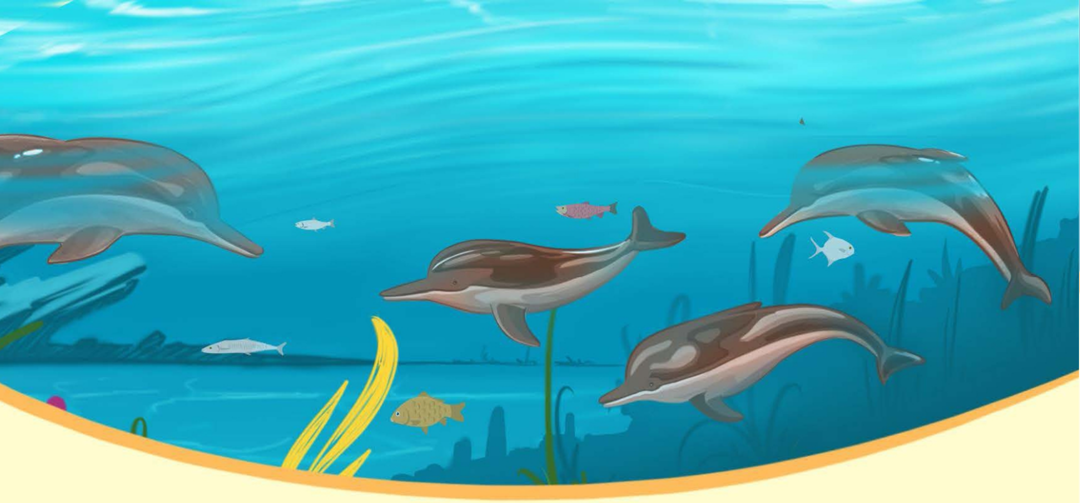

सारे बच्चों ने एक दूसरे को देखा और आपस में खुसुर–फुसुर करने लग गये। डॉली ने पूछा कि क्या बात है ? डुग्गू बोला माँ बच्चे कह रहे हैं क्या मछलियाँ साँस नहीं लेतीं। डॉली हँसी और बोली मेरे प्यारे बच्चो पृथ्वी पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी सास लेता है, यहां तक कि पेड़ पौधे तक। सारे बच्चे आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगे कि कहीं पेड़ भी सांस लेते हैं। डॉली बच्चों को असमंजस में देख कर मुस्कराई,और बोली कि विज्ञान ये साबित कर चुका है कि पेड़ पौधे साँस लेते हैं। और मछलियाँ भी साँस लेती हैं लेकिन पानी के अंदर ही, उन्हें साँस लेने के लिए हम डॉल्फिन की तरह बाहर नहीं आना पड़ता है। डुग्गू ने बोला कि आप हम सब को चकरा रहे हो मां अगर मछलियां भी सांस लेती हैं और हम भी सांस लेते हैं तो फिर हम भी तो मछली ही हुए ना। डॉली हंसते हुए बोली कि भोले बच्चों हम मछली की तरह दिखते हैं लेकिन मछली नहीं हैं। क्योंकि मछलियाँ अंडे देती हैं और डॉल्फिन बच्चे देती है पहला अंतर तो यही है और रही बात साँस लेने की तो मछलियों के

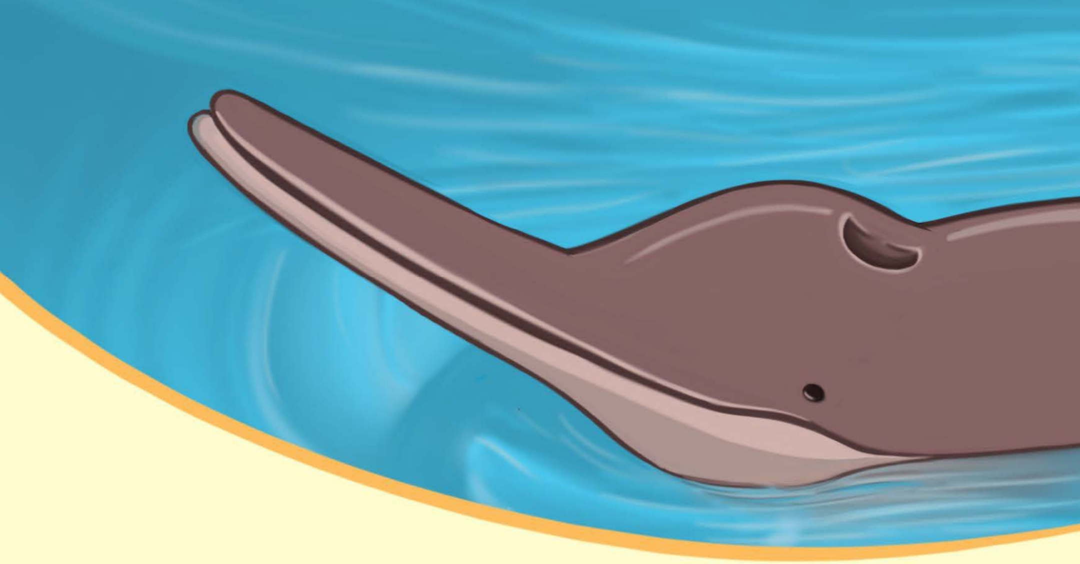

साँस लेने के लिए गलफड़े होते हैं जबकि डॉल्फिन के फेफड़े होते हैं। यही कारण है कि मछलियाँ पानी में घुली हुई ऑक्सीजन में साँस ले लेती है और हमें पानी से बाहर आना पड़ता है क्यों कि हम साँस लेने के लिए हवा में घुली हुई ऑक्सीजन पर निर्भर करते हैं। इसीलिए डॉल्फिन मैमल यानी कि स्तनपाई की श्रेणी में आती हैं, इसलिए हम बहुत महत्वपूर्ण हैं। डुग्गू ने सारे बच्चों की तरफ शान से देखा और ताली बजाई। बच्चों ने भी डुग्गू की देखा–देखी ताली बजाई।

डिंकी ने बोला कि इससे पहले हमें तो इस तरह की जानकारी ही नहीं थी लेकिन मैंने तो सुना है कि जिनके फेफड़े होते हैं उनके सूंघने और साँस लेने के लिए नाक होती है। डॉली ने डिंकी को देखा और बोला कि डिंकी ने बिल्कुल सही प्रश्न किया है, डॉल्फिन के भी नाक होती है जो कि डॉल्फिन के सिर के ऊपर की तरफ जो एक छेद जैसा होता है वो ही तो डॉल्फिन की नाक होती है। डॉली ने कहा कि अभी और

कई बातें हैं जिनसे पता चलता है कि हम किस प्रकार मछलियों से भिन्न हैं। डुग्गू ने सिर खुजाते हुए बच्चों की ओर देखा और प्रश्न किया कि और ऐसे कौन से कारण हैं ?? डॉली हंसी और बोली कि क्या सारी पढ़ाई आज ही कर लोगे। अगर मैं आज ही सब बता दुंगी तो तुम सब भ्रमित हो जाओगे। इसलिए बाकी की जानकारियां कल। लेकिन बच्चों को ये सब याद करके लाना होगा क्योंकि ये भी कॉम्पटीशन का हिस्सा है, और सब बच्चों को प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

सारे बच्चों ने हामी भरते हुए कहा कि वो ये सब याद करके लायेंगे। अगले दिन सूरज उगने के साथ ही सारे बच्चे पानी की सतह के मैदान में जम गये और कलाबाजियाँ खाते हुए उछल कूद मचाने लग गये। डॉली ने उन सबकी ओर देखते हुए सोचा कि डुग्गू और उसके साथ के बच्चों को खेल–खेल में जीवन कौशल से परिचित करवाने और आत्मनिर्भर बनाने की उसकी युक्ति काम कर रही है उसने मुस्कराते हुए डुग्गू की नानी की ओर देखा और बोला मां देख रही हो अपने डुग्गू को अब वो बड़ा होने लगा है। आप नाहक ही उसकी चिन्ता करती थीं।

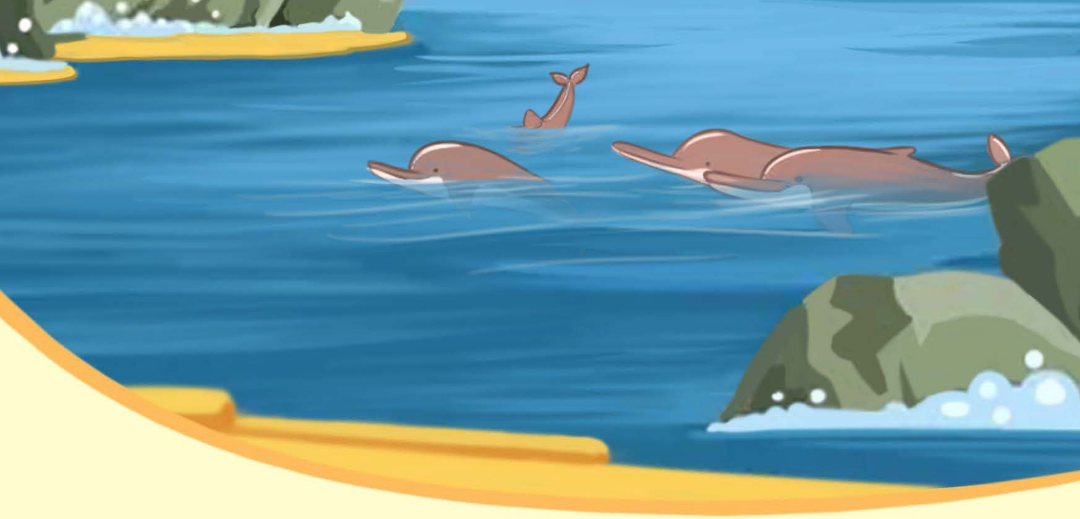

नानी हँसते हुए बोली तुमने तो कमाल ही कर दिया डुग्गू ही नहीं उसके साथ के सारे बच्चों को एक सच्ची डॉल्फिन बनाने की पहल कर दी वरना ये शैतान मंडली कुछ करती ये मुझे शक था। दोनो मुस्कराते हुए बच्चों की उछल कूद देर तक देखती रहीं।

डुग्गू का आत्मविश्वास अब बढ़ने लगा है। वो कभी–कभी डॉली को छोड़ कर दूसरे बच्चों के साथ सतह पर अठखेलियाँ करते–करते कुछ दूर निकल जाता है। डॉली को उसकी चिन्ता तो रहती है लेकिन वो ये सोच कर खुद को समझा लेती है कि ये तो प्रकृति का नियम है। पर डुग्गू की लापरवाही उसे परेशान करती है। डुग्गू को तो अब अपने साथियों के साथ मजा आने लगा है। एक दिन और बच्चों के साथ खेलते–खेलते डुग्गू नदी के किनारे की ओर चला गया पानी के किनारे पर उसे हलचल सुनाई दी। उसने डिंकी से पूछा कि क्या उसे भी कुछ सुनाई दे रहा है। डिंकी ने कहा हाँ सुनाई तो दे रहा है जैसे कुछ हल्ला हो रहा है। पर दिखाई कुछ नहीं दे रहा है। बाकी के बच्चों से पूछने पर उनका भी वही अनुभव था जो डिंकी और डुग्गू का था। आवाजें काफी तेज आ रही थीं।

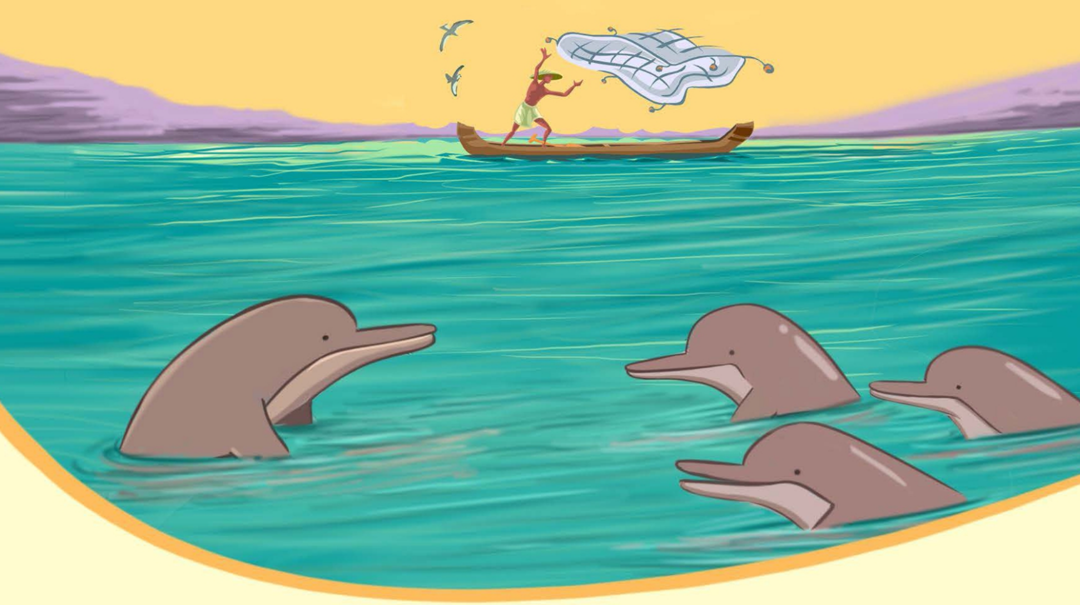

बच्चे डर के मारे तुरंत अपने घर की ओर चल दिये। उधर डॉली परेशान हो कर बच्चों को ही ढूंढ रही थी पूछने पर पता चला वो सब एक साथ कलाबाजियाँ खाते–खाते किनारे की ओर चले गये थे। डॉली डर गई उसने बच्चों से कहा कि वो ऐसा कभी ना करें क्योंकि किनारे पर इन्सानों की बस्ती के नजदीक हमेशा खतरा बना रहता है। वहाँ वो लोग बड़े–बड़े जाल लगा कर रखते हैं जिनसे कि हमें हमेशा खतरा रहता है। डुग्गू डर गया कि मां आज नाराज हो गई है। रात में डुग्गू माँ से लिपटा–लिपटी करने लगा। डॉली ने डुग्गू को खुद से जोर से चिपटाते हुए बोला आइन्दा ऐसा ना करे क्योंकि किनारे पर हमेशा खतरा रहता है अगर डुग्गू को कुछ हो गया तो वो कैसे जी पायेगी। डुग्गू ने मासूमियत से बोला, माँ हमें किनारे पर केवल आवाजें सुनाई पड़ रही थीं लेकिन दिखाई तो कुछ भी नहीं दे रहा था।

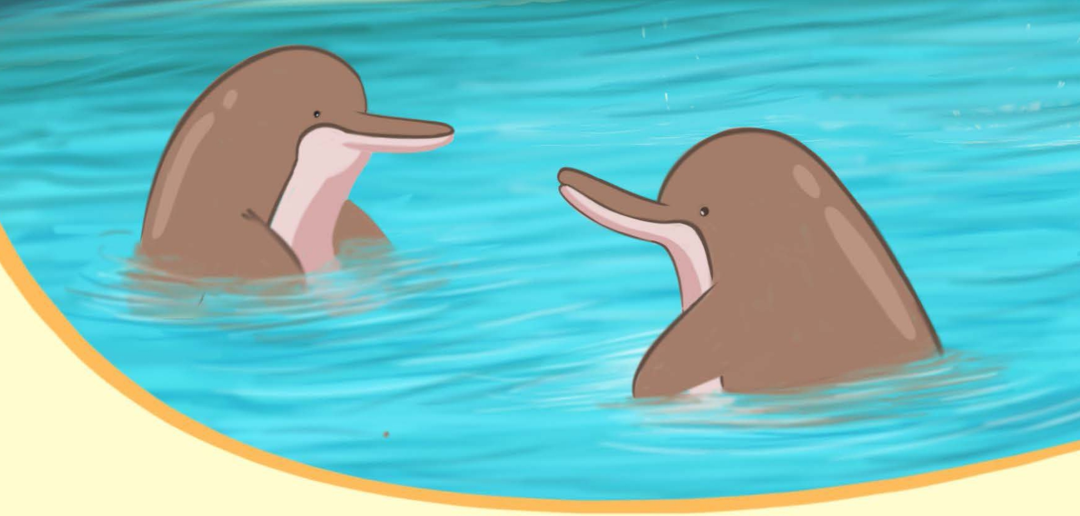

डॉली ने डुग्गू से बोला कि मेरे भोले बच्चे गंगा नदी में रहने वाली डॉल्फिन को दिखाई नहीं पड़ता। उनके आँखों की जगह केवल आँखों के गड्ढे जैसे बने होते हैं। डुग्गू ने बोला कि उसे तो कभी महसूस ही नहीं हुआ कि उन सबको दिखलाई नहीं पड़ता है। डॉली ने जवाब दिया कि गंगा में रहने वाली डॉल्फिन भले हीं देख नहीं पातीं पर उनकी सुनने की क्षमता बहुत ज्यादा होती है वो पानी की तरंगों से ही अपने शिकार या खतरे का आभास कर लेती हैं। डुग्गू ने बोला कि तभी उसे किनारे पर केवल आवाज सुनाई पड़ रही थीं पर दिखाई कुछ नहीं पड़ रहा था। डॉली ने कहा ये विकृति डॉल्फिन प्रजाति में केवल गंगा में रहने वाली डॉल्फिन की ही है समुद्र में यानी खारे पानी की डॉल्फिन की आँख होती हैं। डुग्गू हैरान हो कर ये सब सुनता रहा और सोचता रहा कि उसे तो ये कभी ये पता ही नहीं चला कि उसकी आँखें नहीं है। उसे लगता है कि वो अपनी माँ को देख पाता है। कितनी सुन्दर दिखती है उसकी माँ।

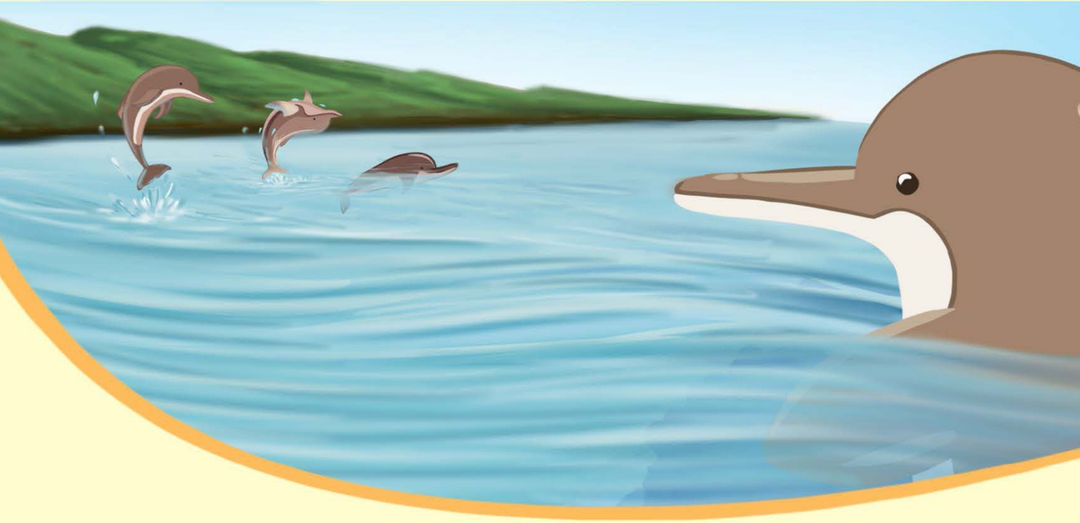

उसने जब डॉली को ये बात बताई तो डॉली लाड़ से बोली, मेरे प्यारे डुग्गू तुम मुझे कल्पनाओं में देखते हो। तुम मेरे इतने नजदीक हो कि अपने मन में तुमने मेरा काल्पनिक चित्र बनाया हुआ है और तुम ही नहीं तुम जैसे सारे बच्चों की यही सोच है। डुग्गू को बहुत रात तक नींद नहीं आई। उसे याद आया कि उस दिन जब वो बच्चों के साथ कॉम्पटीशन में पहले दिन प्रैक्टिस के लिए गया था तो क्या उस दिन उसने जो सूरज देखा था वो भी काल्पनिक था ? ये ही सब सोचते –सोचते जाने कब डुग्गू को नींद आ गई। सुबह माँ की आवाज से डुग्गू की नींद खुली अलसा के उसने अंगड़ाई ली। माँ ने बोला कि क्या वो आज बच्चों के साथ कलाबाजी की प्रैक्टिस के लिए नहीं जायेगा। डुग्गू को ध्यान आया कि हाँ आज तो तीन कलाबाजियों की प्रैक्टिस करनी है वो एक झटके से उछल कर पानी की सतह पर आ गया, देखा कि सारे बच्चे प्रैक्टिस में मगन हैं। वो दौड़ लगा कर बच्चों के नजदीक गया और कलाबाजियाँ खाने लगा।

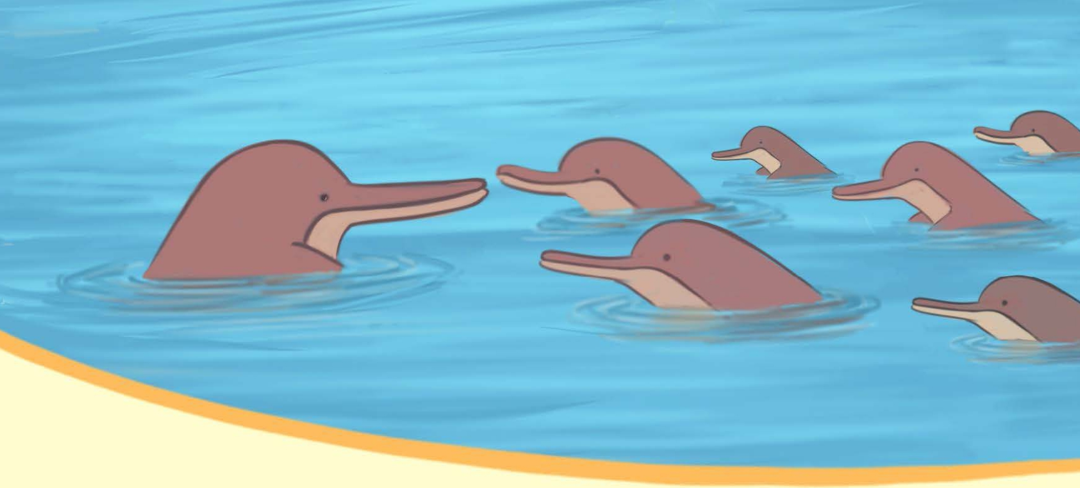

डॉली नदी में बच्चों को कलाबाजियाँ खाते देखती रही बच्चे मगन हो कर अपनी मस्ती में डूबे थे। डॉली मन में सोचने लगी अब बच्चे बड़े हो रहे हैं। एक दिन ऐसा भी आयेगा उनके अपने–अपने परिवार होंगे। और वो अपने बच्चों को उसी की भांति जीवन कौशल की शिक्षा दे रहे होंगे। उसे खुशी हो रही थी कि उसकी कोशिश रंग ला रही है। लेकिन अभी उन्हें अपनी सुरक्षा की शिक्षा भी देनी होगी। नदी में जीवित रहने के गुर सिखाने होंगे। डॉली ने बच्चों को वापस आने के लिए आवाज दी। डुग्गू ने आनाकानी करते हुए कहा कि अभी वो और बाकी के बच्चे खेलना चाहते हैं। डॉली ने सभी को तुरंत वापिस आने का आदेश दिया। सारे बच्चे डॉली के पास आ गये डॉली ने उन्हें समझाया कि उसे आभास हो रहा है कि कोई बड़ी नाव उस तरफ आ रही है जहाँ बच्चे खेल रहे थे। डुग्गू ने बोला उनको तो पता नही लगा कि कोई बड़ी नाव आ रही है।

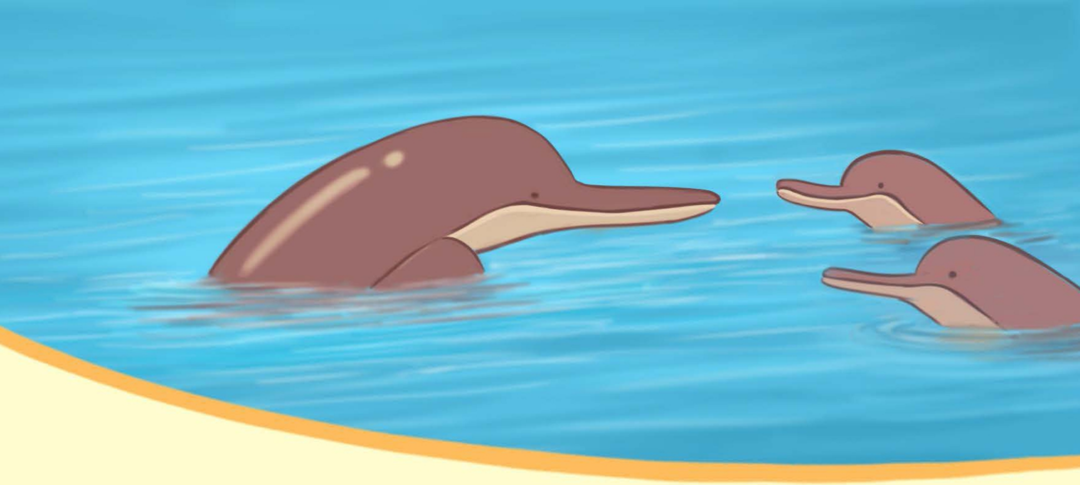

डॉली ने प्यार से डुग्गू का सिर सूंघा और बोली प्यारे डुग्गू धीरे–धीरे तुम सब जान जाओगे। भगवान ने सभी प्राणियों को कुछ ना कुछ प्राकृतिक वरदान दिये हैं। अब जैसा कि तुम जानते हो कि हम डॉल्फिन देख नहीं पाती पर हम ईकोलोकेशन से अपने आस–पास होने वाली हल–चल से ही हर प्रकार के खतरों का या अपने शिकार का पता लगा सकती हैं। जिससे हमें आँखें ना होने के बावजूद सारी चीजों का अहसास हो जाता है। जैसा कि तुम खुद महसूस कर चुके हो उस दिन गाँव के नजदीक जा कर। बस तुम को अपनी इस ताकत को इस्तेमाल करना आना चाहिये। जिसके लिए तुम बच्चों को अभी और शिक्षित होने की आवश्यकता है। डुग्गू ने डॉली की तरफ देखा और पूछा कि क्या हम जिन्दगी भर सीखते ही रहेंगे। डॉली ने डुग्गू के सिर पर हल्की चपत लगाई और हँसते हुए बोली, प्यारे डुग्गू सीखना और सिखाना सारी जिन्दगी चलता है। सीखने की कोई उमर नहीं होती है, ये एक अनवरत प्रक्रिया है।

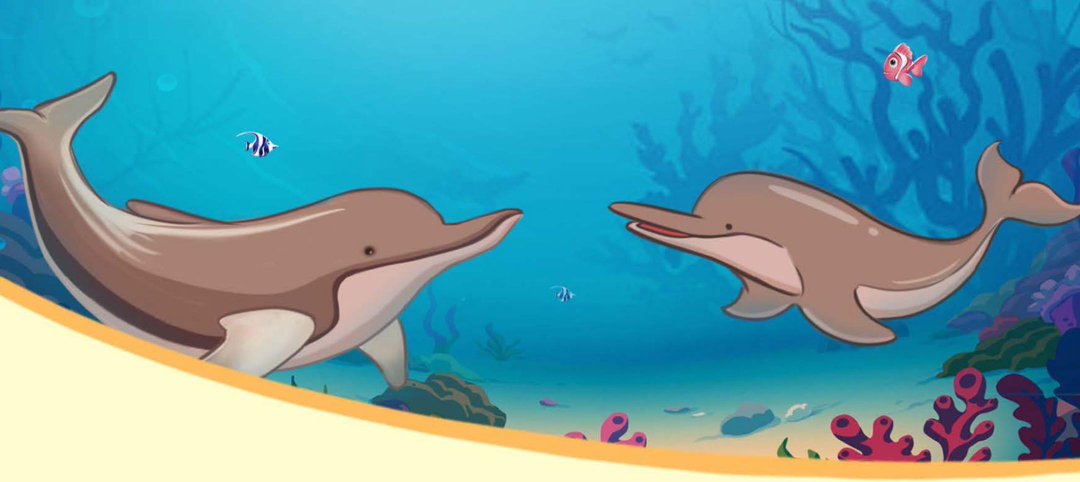

डुग्गू ने गहरी साँस ली और सोचा अब और कितना सीखना होगा ? डॉली ने डुग्गू के मन की बात भाँपते हुए पूछा अच्छा डुग्गू ये बताओ कि तुम डॉल्फिन्स के बारे मे क्या जानते हो ? डुग्गू ने सोचा माँ भी ना....पता नहीं क्या–क्या पूछती है अब डॉल्फिन के बारे में क्या जानना है। फिर भी उसने जवाब दिया कि डॉल्फिन गंगा में पाई जाती हैं और वो बच्चे देती हैं। डॉली ने कहा, ये तो सही है पर क्या तुम जानते हो कि हमारे और रिश्तेदार डॉल्फिन परिवार भी हैं जो गंगा के अलावा और नदियों में भी पाये जाते हैं। डुग्गू ने माँ की ओर देखा और अचम्भित हो कर पूछा कि और डॉल्फिन परिवार ? वो कहाँ रहते हैं ? क्या वो हमारे जैसे ही होते हैं ? और अगर वो हमारे रिश्तेदार हैं तो हम उनसे मिलते क्यूं नहीं। डॉली ने डुग्गू से कहा कि हाँ हमारे रिश्तेदार ही हैं वो लेकिन वो गंगा में ना रह कर और जगह रहते हैं। डॉल्फिन समुद्र के खारे पानी में रहती हैं और कुछ नदियों के मीठे पानी में लेकिन कुछ ऐसी भी होती हैं जो खारे पानी में भी रहती हैं और मीठे पानी में भी रहती हैं। डुग्गू माँ की बात सुन रहा था और उसकी बालसुलभ उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी।

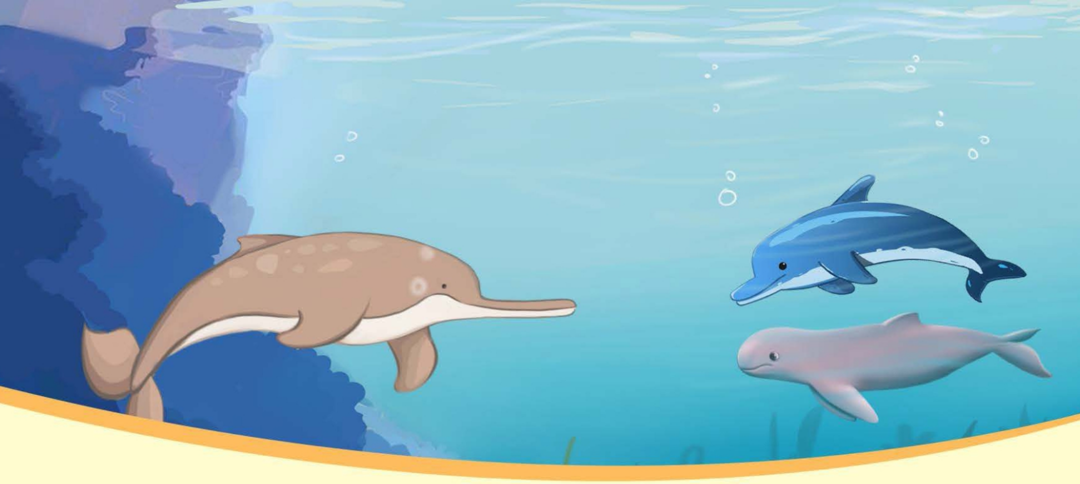

डॉली ने बोलना जारी रखते हुए कहा कि डुग्गू तुम्हें ये जानकर आश्चर्य होगा कि बाकी की डॉल्फिन देख भी सकती हैं केवल गंगा नदी में रहने वाली डॉल्फिन की ही आँखें नहीं होती। डुग्गू ने पूछा इसका कारण क्या है ? गंगा की डॉल्फिन के आँखें क्यों नहीं होती हैं ? डॉली ने उत्तर दिया कि गंगा में रहने वाली डॉल्फिन के शायद कभी आँखें रही होंगी पर वक्त के साथ शायद गंगा की डॉल्फिन को आँखों की उतनी जरूरत ना रही हो... तो उनके केवल आँख का निशान रह गया, और आँखों के बदले उनकी महसूस करने की क्षमता अधिक विकसित हो गई जिससे की वो गंगा की तरंगों से ही अपने शिकार और खतरों का आभास कर लेती हैं। डुग्गू अचम्भित हो कर माँ की बात सुनता रहा पर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ये कैसे हो सकता है कि गंगा की डॉल्फिन तो देख नहीं पाती जबकि अन्य देख पाती हैं। डॉली ने हल्के से डुग्गू की पीठ सहलाई और उसकी जिज्ञासा को भाँपते हुए उत्तर दिया प्यारे डुग्गू ये सब प्रकृति ही तय करती है हमें अपने जिस अंग की ज्यादा आवश्यकता नहीं होती वो धीरे–धीरे शरीर से गायब होने लगते हैं।

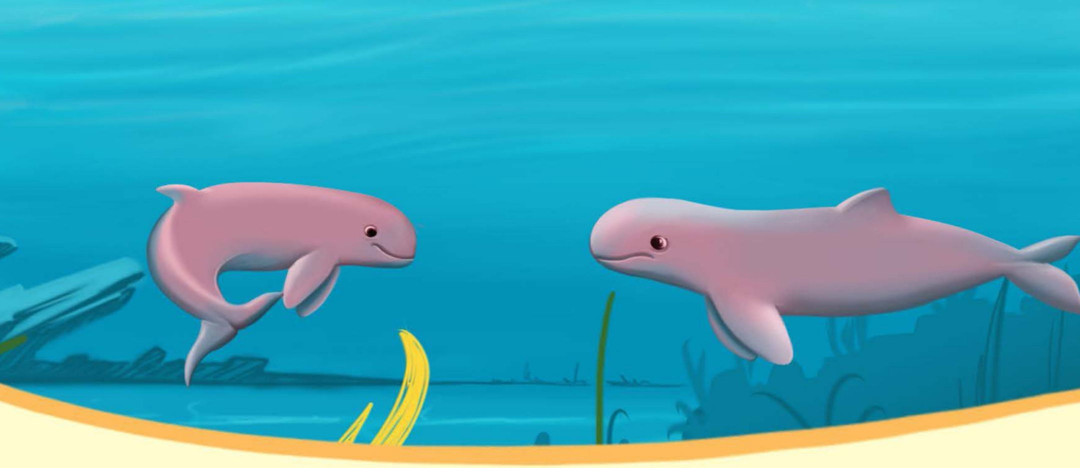

और हो सकता है कि खारे पानी की डॉल्फिन को वर्तमान में भी आँखों की जरूरत पड़ती हो तो उनके आँखें भी हैं और महसूस करने की क्षमता भी।

डुग्गू उछलते हुए डॉली के नजदीक आया और बोला माँ आप हमारे कुछ और रिश्तेदारों की बात कर रहीं थी ? क्या वो हमारे यहाँ नहीं आते? डॉली ने हँसते हुए उत्तर दिया बेटा हमारे और रिश्तेदार इंडस नदी में और इरावडी डॉल्फिन चिल्का लेक में तथा गंगा के उस छोर पर जहाँ गंगा बंगाल की खाड़ी से मिलती है सुंदर वन वाले इलाके में रहते हैं। जो कि यहां से काफी दूर पड़ता है तुम्हें पता है हमारी एक और रिश्तेदार इरावडी डॉल्फिन, हम गंगा में पाई जाने वाली डॉल्फिन की तरह काली नहीं होती। डुग्गू ने आश्चर्य से पूछा कि फिर कौन से रंग की होती हैं वो ? डॉली ने उत्तर दिया कि हमारी इरावडी बहनें गोरी होती हैं। डुग्गू हैरान रह गया कि डॉल्फिन भी गोरी होती हैं कहीं। माँ ने डुग्गू के संशय को दूर करते हुए कहा कि इरावडी डॉल्फिन गोरी यानी हल्के गुलाबी रंग की होती हैं।

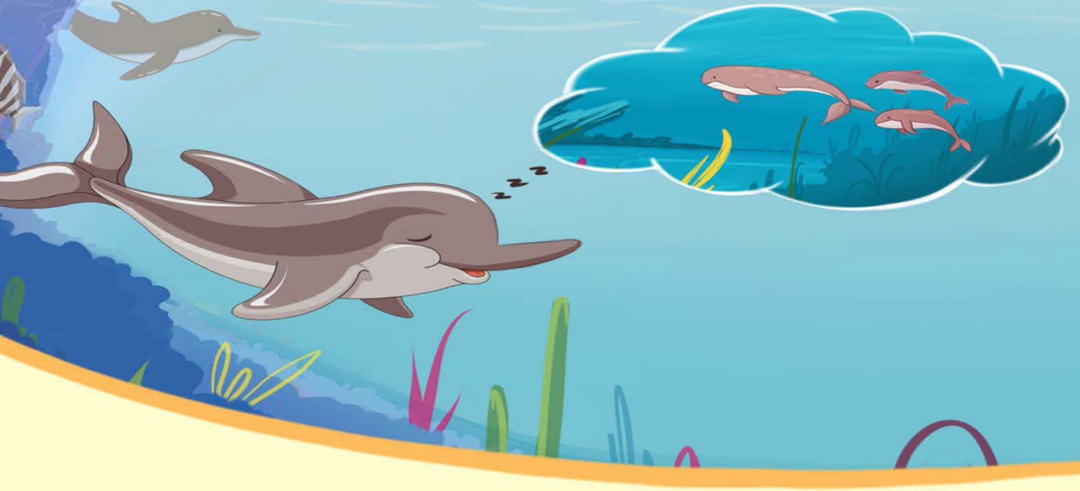

डुग्गू सोच में पड़ गया कि गुलाबी डाल्फिन कैसी लगती होंगी। डॉली ने डुग्गू को प्यार से सहलाते हुए कहा, डुग्गू अभी तुम छोटे हो आगे चल के तुम्हें बहुत सी ऐसी बातें पता चलेंगी जो कि तुम्हारे जीवन को आगे सुरक्षित और दीर्घजीवी रखने के लिए जरूरी होंगी। डुग्गू ने डॉली से पूछा क्या पिंक डॉल्फिन के बच्चे भी पिंक होते हैं। डॉली ने हँसते हुए उत्तर दिया कि जब मां गुलाबी होगी तो बच्चे तो गुलाबी ही होंगे ना ? डुग्गू बहुत देर तक गुलाबी डॉल्फिन के बारे में सोचता रहा। रात को सपने में भी उसे इरावडी डॉल्फिन और उसके पिंक–पिंक बच्चे दिखते रहे।

डॉली ने प्रातः की किरण के साथ डुग्गू को सहलाया और फुसफुसा कर डुग्गू के कान में कहा, डुग्गू उठो बच्चे नदी की सतह पर आ चुके हैं। डुग्गू ने अंगड़ाई ली और माँ की तरफ देखा और बताया कि रात को उसे गुलाबी डॉल्फिन सपने में दिखीं। डॉली ने डुग्गू से कहा कि अब हमें पानी की सतह पर चलना चाहिये जहाँ और डॉल्फिन बच्चे इन्तजार

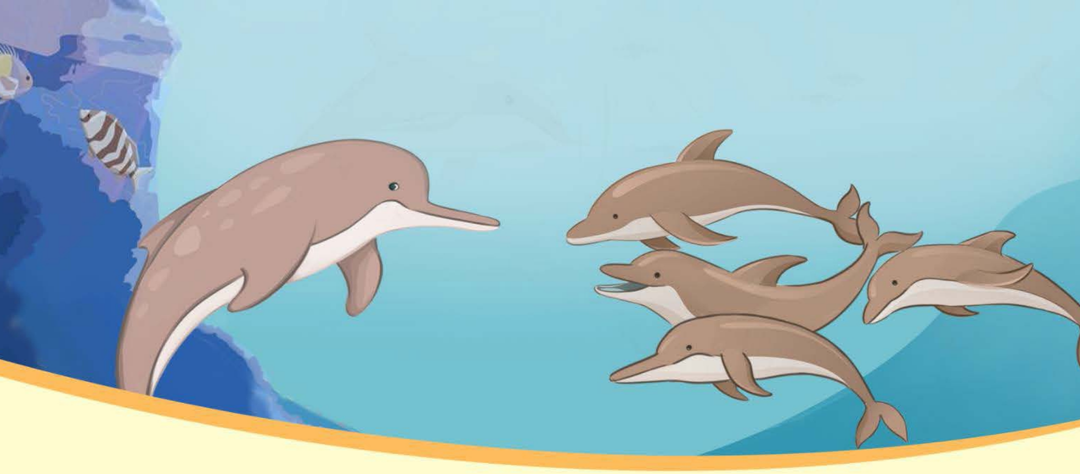

कर रहे आज बच्चों का प्रोग्राम नदी के दूसरे छोर पर जाकर अपने लिए खाना तलाशने का है। सारे बच्चे उत्साहित हैं कि वो अब अपने मा—बाप की सहायता के बिना अपने लिए खाने का इन्तजाम करेंगे। डुग्गू भी बेचैन है कि बस किसी तरह वो अपनी माँ को मछली पकड़ कर अपने लिए खाने का इन्तजाम कर के दिखायेगा। डॉली ने बच्चों से दो टोलियों में बँट जाने को कहा। बच्चे दो टोलियों में बँट गये वो बेहद उत्साहित और रोमांचित थे कि आज उन्हें खुद से अपने खाने की तलाश करनी है।

डुग्गू और डिंकी ने साथ रहने का फैसला लिया और अपने अन्य साथियों के साथ गंगा के दक्षिणी छोर की ओर निकल पड़े। दूसरी टोली ने पश्चिम की ओर जाने का निर्णय लिया। डुग्गू और उसके साथी डॉल्फिन बच्चे पानी में अठखेलियाँ करते नदी के दक्षिणी किनारे पर पहुँच गये। बच्चों की टोली मछलियों की तलाश में कभी गहरे पानी में डुबकी लगाती और कभी सतह पर कलाबाजियाँ खाती और गुडुप—गुडुप करके छोटी मछलियाँ खाते।

डुग्गू बच्चों से थोड़ा हट के तैर रहा था उसने सोचा कि शायद ऐसा करके वो ज्यादा से ज्यादा मछलियाँ खा लेगा और माँ को बतायेगा कि आज उसने बच्चों से ज्यादा बेहतर तरीके से शिकार किया है। गहरे पानी में उतरते ही डुग्गू ने देखा कि एक जगह पर खूब सारी मछलियाँ एक साथ इकट्ठा हैं, उसने सोचा कि वाह ये तो मछलियों का खजाना ही हाथ लग गया। जल्दी से जा कर अपनी टोली को बुला कर दिखाता हूँ कि देखो मेरे हाथ कितना बड़ा खजाना लगा है। जैसे ही वो सतह में आने के लिए पलटा अचानक से उसने महसूस किया कि उसके चारों ओर कुछ लिपटा हुआ है। उसने कलाबाजी खाई लेकिन वो और उलझ गया। वो जितना ज्यादा निकलने के लिए कोशिश करता ये पतले तारनुमा चीज उसके बदन के चारो ओर लिपटती जाती। डुग्गू समझ गया कि वो किसी मुसीबत में फँस चुका है। उसने सहायता के लिए अपने साथी दोस्तों को आवाज लगाई। लेकिन बच्चों से दूरी के कारण वो उसकी आवाज नहीं सुन पाये। डुग्गू उस चीज से छूटने के लिए पूरा जोर लगाने लगा।

अचानक डिंकी को अहसास हुआ कि डुग्गू उन लोगों के साथ नहीं है। डिंकी उसे खोजते हुए गहरे पानी की ओर गई। कुछ दूर जाने पर ही उसे डुग्गू की आवाज सुनाई पड़ी जो कि सहायता के लिए पुकार रहा था। डिंकी को डुग्गू की आवाज के साथ कुछ और अजनबी आवाजें भी सुनाई पड़ीं डिंकी को समझ में आ गया कि डुग्गू मुसीबत में फँसा हुआ है पर उसको समझ नहीं आया कि डुग्गू के अलावा और जो आवाजें हैं, वो कैसी हैं। डिंकी डर गई वो चाह कर भी डुग्गू के नजदीक नहीं जा पा रही थी। उसे लगा कि कहीं वह भी डुग्गू की तरह किसी मुसीबत में ना फँस जाये।

वे एक जगह छुप कर चुप–चाप सुनती रही। उसे ये तो लग रहा था कि जो अजनबी आवाजें हैं वो कुछ–कुछ उन्हीं आवाजों के समान थी जो उस दिन सुनी थीं जब वो और डुग्गू कलाबाजियाँ खाते–खाते गांव के नजदीक चले गये थे। वो लोग आपस में कुछ बोल रहे थे जो डिंकी की समझ में नहीं आ रहा था। पर वो अपने दोस्त डुग्गू की सहायता करना चाहती थी। आवाजें लगातार आ रही थीं।

थोड़ी देर बाद ही डिंकी को डुग्गू के तैरते हुए अपनी तरफ आने का अहसास हुआ। वो खुशी से उछल पड़ी। उसने डुग्गू को आवाज दी डुग्गू नजदीक आया तो उसने डुग्गू से पूछा कि क्या हुआ था? डुग्गू ने बताया कि वो किसी चीज में उलझ गया था जिससे कि उसने निकलने के लिए बहुत जोर लगाया लेकिन निकल नहीं पाया। अचानक से कुछ लोग आये जिन्होंने उसे उस चीज को काट कर मुसीबत से बचा लिया। डिंकी ने देखा डुग्गू काफी डरा हुआ है, उसने डुग्गू से कहा कि आइन्दा अकेले मत जाना।

सारे बच्चे डुग्गू और डिंकी का इंतजार कर रहे थे। डुग्गू बच्चों से आंखें चुरा रहा था। बच्चों के पूछने पर डिंकी ने उत्तर दिया कि कि डुग्गू तैरते और कलाबाजियाँ खाते हुए ज्यादा दूर चला गया था इसलिए थोड़ा थक गया है। डिंकी ने बच्चों से कहा कि अब उन्हें घर की ओर चलना चाहिये। सारे बच्चे खुशी से उछलते कूदते घर की ओर चल पड़े। लेकिन डुग्गू चुप–चाप था। घर आने पर डॉली ने डुग्गू का घबराया हुआ महसूस किया।

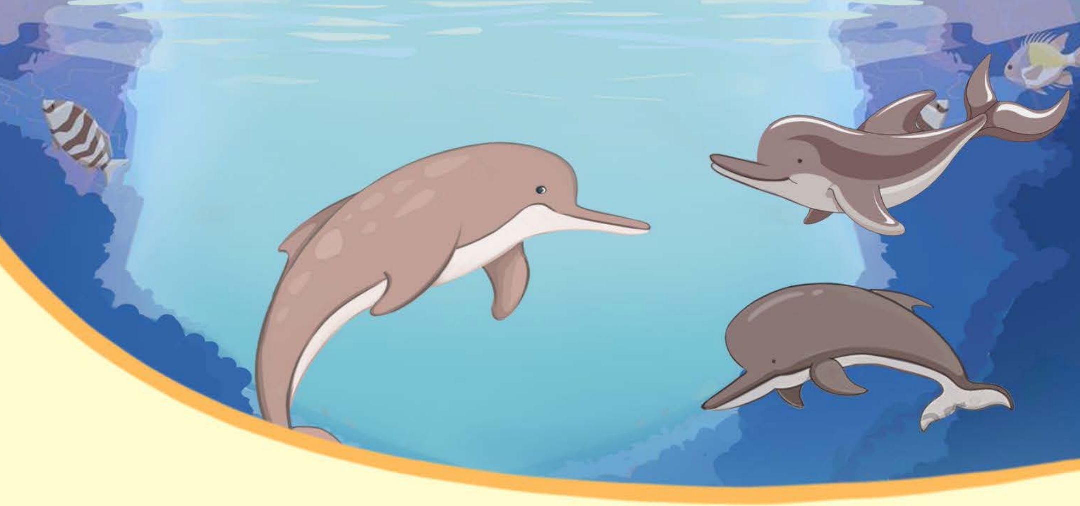

पूछने पर डुग्गू ने कोई जवाब नहीं दिया लेकिन वो बहुत डरा हुआ था। डॉली समझ गई थी डुग्गू के साथ कोई घटना घटी है जिसे वो बता नहीं रहा है। डॉली ने डिंकी से पूछा कि क्या बात है डुग्गू को क्या हो गया है। डिंकी ने सारी घटना विस्तार से डॉली को बताई और बताया कि किस प्रकार कुछ लोगों ने डुग्गू की मदद की। डॉली ने सारे बच्चों को एक जगह इकट्ठा होने को कहा। डिंकी ने सभी बच्चों को आवाज लगाई और पानी की सतह में एकत्रित होने को कहा। डुग्गू ना नुकुर करता रहा डॉली के समझाने पर वो बुझे मन से बच्चों के साथ खड़ा हो गया। डॉली ने बच्चों से कहा कि वो आज का अपना अनुभव अन्य बच्चों साझा करें।

सारे बच्चों ने अपने मजेदार अनुभव साझा किये और बताया कि किस प्रकार उन्होंने अपने खाने का इन्तजाम अपने आप से किया और बताया कि उन्होंने कितना इन्जॉय किया। लेकिन डुग्गू ने कुछ नहीं बताया। डॉली ने डुग्गू को अपना अनुभव साझा करने के लिए प्रेरित किया। माँ

की बात सुन कर डुग्गू की आँखे भर आईं उसने अपना मुँह झुकाये हुए कहा कि उसका आज का अनुभव कुछ अच्छा नहीं रहा। उसने सोचा था कि आज के अपने अनोखे प्रयास से वो माँ को खुश कर देगा लेकिन वो ऐसा नहीं कर पाया और मुसीबत में फँस गया। उसकी अपने साथियों से अलग जा कर शिकार करने की युक्ति काम नहीं आई। उसे ऐसा नहीं करना चाहिये था। डॉली ने डुग्गू का सिर प्यार से सहलाया और कहा प्यारे डुग्गू वक्त हमारी परीक्षा लेता है। तुम अगर अपने साथियों से नहीं बिछड़े होते तो शायद मुसीबत में नहीं फँसते लेकिन ये भी एक परीक्षा ही है। इसने तुम्हें मुसीबत के समय विवेक से काम लेना सिखाया और आइन्दा ऐसी गलती ना करने की सीख दी।

डुग्गू ने माँ से पूछा कि वो कौन लोग थे जिन्होंने आज उसकी मदद की। डॉली ने उत्तर दिया कि वो लोग गंगा प्रहरी हैं जिन्हें कि भारतीय वन्यजीव संस्थान के द्वारा मुसीबत में फँसे घायल जलीय जीवों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। डुग्गू का सिर सहलाते हुए डॉली ने कहा कि आज अगर गंगा प्रहरी तुम्हें जाल से नहीं

बचाते तो शायद अनर्थ हो जाता। डुग्गू अब तुम बड़े और समझदार हो गये हो तुमने आगे बहुत बड़ा जीवन जीना है और आज मैं जिस तरह तुम्हें जीवन कौशल का पाठ पढ़ा रही हूँ एक दिन उसी तरह तुम अपने बच्चों को पढ़ा रहे होंगे। डुग्गू ने मां से वादा किया कि आइन्दा वो इस बात का ध्यान रखेगा और पूरी सतर्कता बरतेगा। डॉली ने सारे बच्चों को डुग्गू के साथ हुई घटना से सीख लेने के लिए बोला सबने हामी में सिर हिलाया और वादा किया कि वो इस बात का हमेशा ध्यान रखेंगे कि वो किनारों पर जाने से बचेंगे और जाल व शिकारियों के अवैध शिकार होने के प्रति सतर्क रहेंगे।

डॉली को अब विश्वास हो चला है कि डुग्गू अब धीरे–धीरे एक आत्मविश्वासी डॉल्फिन बनने की ओर कदम बढ़ा रहा है। अब वो उससे ज्यादा चिपकता भी नहीं है। हालांकि अभी उसके लिए बहुत कुछ सीखना बाकी है लेकिन वो पहले से बेहतर सीख रहा रहा है। डॉली को हर माँ की तरह अपने बच्चे को बड़े होते देखना अच्छा लग रहा है पर उसे अपने उसी नन्हें डुग्गू की मासूमियत भरी शैतानियाँ पसंद थीं।

उसने संतुष्टि भरी निगाह से माँ को देखा और पूछा कि अब उसका डुग्गू के बारे में क्या सोचना है। नानी ने मुस्कराते कि तुम एक बेहतरीन माँ हो तो डुग्गू तो एक बेहतर डॉल्फिन साबित होगा ही।

आओ ज्ञानी बनें

बच्चों आपने डॉल्फिन के विषय में पढ़ा और सुना तो होगा ही कि डॉल्फिन समुद्र में पाई जाती है और पानी में गोते लगाती है, खेलना पसंद करती है आदि–आदि पर क्या आप ये जानते हैं कि हमारी गंगा में भी डॉल्फिन पाई जाती है ? और स्थानीय भाषा में इसे सूंस कहते हैं। गंगा के किनारे रहने वाले बच्चों ने अवश्य सूंस देखी होगी। लेकिन शायद उसके विषय में बहुत अधिक जानकारी नहीं होगी। वैसे तो डॉल्फिन के विषय में अधिकांश जानकारी आपको पुस्तिका की शुरूआत में ही दे दी गई है। लेकिन फिर भी थोड़ा वैज्ञानिक आधार पर ज्ञानवर्धन होना भी आवश्यक है।

डॉल्फिन जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के अनुकूल विशेष शारीरिक बनावट वाले जीव होते हैं। पानी में तैरने के लिए डॉल्फिन के फ्लिपर होते हैं। पानी के अन्दर विचरण करते और खाना निगलते समय इनके अनोखे नासापुट और कन्ठनली पानी को फेफड़ों में जाने से रोकते हैं। डॉल्फिन खाद्य श्रृंखला में शीर्ष के शिकारी होते हैं और स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र के संकेतक होते हैं। गंगेय डॉल्फिन पूर्णतः जलीय होते हैं और गहरे तथा तेज प्रवाह वाले इलाकों में पाये जाते हैं। इनके दैनिक एवं मौसमी प्रवास के लिए नदी की धारा का अविरल होना आवश्यक है। प्लाटानिस्टा गेंजेटिका तथा प्लाटानिस्टा गेंजेटिका माइनर दो उप प्रजातियाँ सिंधू, गंगा, ब्रह्मपुत्र, मेघना तथा कर्णफूली संघु नदी में पाई जाती हैं। नर 2 से 2.2 मीटर तथा मादा 2.4 से 2.6 मीटर तक लम्बे होते हैं।

इनकी थूथन लम्बी और पतली होती है। तथा सिर के ऊपर स्वसन छिद्र होता है। इनका पेट गोल, मध्य शरीर गठीला तथा तैरने के लिए तरणपाद यानी फ्लिपर होते हैं। “इकोलोकेशन” के माध्यम से ये अपनी दिशा तथा शिकार की खोज करते हैं। ये 30 से 120 सेकेंड में सतह पर साँस लेने आते हैं। हर दो से तीन साल में मार्च से अक्टुबर के महीने में ये एक बच्चे को जन्म देते हैं। मछली पकड़ने के जाल में दुर्घटना वश फँसना, बाँधों के निर्माण व इनके प्राकृतिक आवासों को नुकसान तथा इनके प्रमुख आहार मछलियों का अत्यधिक दोहन के कारण भोजन में कमी और अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं। भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत इन्हें आई.यू.सी.एन की संकटग्रस्त जीवों की लिस्ट में रखा गया है।

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

GACMC
GANGA AQUALIFE CONSERVATION MONITORING CENTRE

एन एम सी जी
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण विभाग,
मेजर ध्यानचंद्र स्टेडियम,
नई दिल्ली–110001

भारतीय वन्य जीव संस्थान
पोस्ट बॉक्स न. 18, मोहब्बेवाला,
देहरादून–248002, उत्तराखंड
फोन न.- 91-135-260112-115
wii.gov.in/nmcg_phase2_introdution

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga

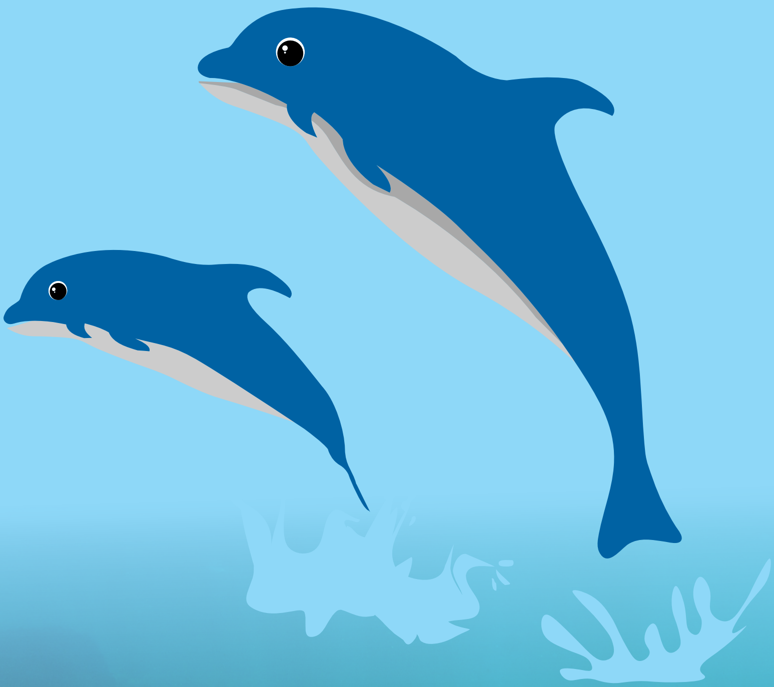

Design: Aman Uniyal